International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

इण्टरमीडिएट स्तर के विद्यालयो में कार्यरत शिक्षको में पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छता के प्रति जागरूकता का अध्ययन

संदीप कुमार जायसवाल

शोधार्थी–(शिक्षक–शिक्षा विभाग) टी.डी.कालेज जौनपुर

सारांश

मानव जीवन में शिक्षा एवं स्वच्छता का महत्वपूर्ण स्थान है। राष्ट्र एवं समाज में रहने वाले प्रत्येक नागरिको को अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने के लिए स्वच्छता,स्वस्थ खान–पान एवं नियमित व्यायाम के अतिरिक्त अपने आस–पास के पर्यावरण को भी स्वच्छ एवं संरक्षित रखने की आदत डालनी चाहिए। भारत सरकार,राज्य सरकार,स्थानीय निकाय तथा गैर सरकारी संगठनो (NGOs) द्वारा समय–समय पर अनेको पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रमो के माध्यम से शिक्षा देकर विद्यार्थियों एवं आम नागरिको को स्वच्छताएवं स्वास्थ्य के बारे में यथा सम्भव जागरूक बनाने का प्रयास किया जा रहा है। वर्तमान में छात्र–छात्राऍ,युवा,प्रौढ़ व बुजुर्ग सभी इन कार्यक्रमो से जागृत व प्रभावित दिख रहे है,जो स्वच्छ,सशक्त भारत की संकल्पना के लिए सुखद संकेत है।
गांधी जी का कहना था कि–"मै स्वच्छ भारत की कामना पहले करता हूँ, स्वतंत्र भारत की बाद में।" गांधी जी के स्वच्छ भारत के सपने को पूरा करने में वर्तमान केन्द्र सरकार अथक प्रयास कर रही है,जिससे प्रभावित होकर देश का प्रत्येक नागरिक स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक हो रहा है।

प्रस्तावना–कहा जाता है कि शिक्षा ही मनुष्य को जीने के योग्य बनाती है।शिक्षा से मनुष्य में तमाम अच्छे गुणो जैसे बड़ो का आदर करना,सदाचार,सद्भावना, भाई–चारा एवं कर्तव्य–परायणता आदि अनेक गुणों का विकास होता है। इन्ही गुणों में एक गुण स्वच्छता भी है।
किसी समाज अथवा राष्ट्रके लिए स्वच्छता का महत्व गांधी के इस कथन से ही स्पष्ट हो जाता है कि "मैं स्वच्छ भारत की कामना पहले करता हूँ,स्वतंत्र भारत की बाद में।" मानव सभ्यता के विकास के क्रम में मनुष्य प्रकृति का अंधा–धुंध दोहन,वनो का कटान,कृषि योग्य भूमि पर भवन निर्माण तथा कल कारखानो का निर्माण करता गया। परिणामतः वातावरण दूषित होता गया,जिसके कारण साफ–सफाई की आवश्यकता महसूस हुई। पर्यावरण के स्वच्छता एवं संरक्षण के प्रति जनचेतना हेतु प्रस्तुत अध्ययन से यह ज्ञात हो सकेगा कि शिक्षको का वर्तमान शैक्षिक परिवेश में स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता के प्रति क्या दृष्टिकोण है।

समस्या का औचित्य

प्रकृति के प्रदूषित होने से मन और बौद्विक चिंतन भी प्रदूषित होता है। अतः हमे अपने हित की रक्षा के लिए पर्यावरणकी रक्षा करनी चाहिए। परन्तु अभी तक पर्यावरणके संरक्षण व संवर्धन की दिशा में कोई ठोस प्रगति नही हुई है।पृथ्वी पर जीवन का आधार ही पर्यावरण है। सदियो से ही बुद्वजीवियो ने मानव जीवन और पर्यावरण को एक दूसरे का पूरक बताया है। और इस सम्बन्ध को मजबूत बनाये रखने एवं पर्यावरण को स्वच्छ रखने की बात कही है।
पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छता से सम्बन्धित कुछ प्रश्न प्रायः शोध कर्ता के सामने प्रस्तुत होते रहते है–

1.शिक्षक स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति कितने जागरूक है।
2.सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनो द्वारा चलाये जा रहे पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छता कार्यक्रमों की उन्हे

कितनी जानकारी है।

3.शहरी एवं ग्रामीण शिक्षको की स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता में क्या कोई अन्तर है?

4.उपरोक्त प्रश्नो का उत्तर प्राप्त करने हेतु शोधार्थी द्वारा इस समस्या को शोध अध्ययन के लिए चयनित किया गया है।

शोध के उद्देश्य –

1.इण्टरमीडिएट स्तर के शहरी शिक्षको में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन ।

2.इण्टरमीडिएट स्तर के ग्रामीण शिक्षको में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन ।

3.इण्टरमीडिएट स्तर के शहरी एवं ग्रामीण शिक्षको में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4.इण्टरमीडिएट स्तर के शहरी शिक्षको में स्वच्छता के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

5.इण्टरमीडिएट स्तर के ग्रामीण शिक्षको में स्वच्छता के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

6.इण्टरमीडिएट स्तर के शहरी एवं ग्रामीण शिक्षको में स्वच्छता के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

1.इण्टरमीडिएट स्तर के शहरी एवं ग्रामीण शिक्षको में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नही है।

2.इण्टरमीडिएट स्तर के शहरी एवं ग्रामीण शिक्षको में स्वच्छता के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शोध की विधि–प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा वर्णनात्मक शोध विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या–प्रस्तुत शोध अध्ययन में जौनपुर जनपद में स्थित यू.पी. बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त इण्टरमीडिएट स्तर के विद्यालयो के शिक्षको को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

न्यादर्श– न्यादर्श हेतु जौनपुर जनपद के इण्टरमीडिएट स्तर के 10 विद्यालयो के 10–10 शिक्षकों(5 शहरी,5 ग्रामीण) का चयन बहुस्तरीकृत प्रतिचयन विधि से किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण–प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियॉ– प्रस्तुत शोधकार्य में सांख्यिकी के रूप में निम्न का प्रयोग किया गया है –

1.प्रतिशत

2.मध्यमान

3.मानक विचलन

शोध का परिसीमांकन–

1.प्रस्तुत शोध अध्ययन उत्तर प्रदेश राज्य के जौनपुर जनपद तक ही सीमित रखा गया है।

2.प्रस्तुत शोध अध्ययन उत्तर प्रदेश बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त इण्टरमीडिएट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों पर ही किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण–

इण्टरमीडिएट स्तर के शहरी एवं ग्रामीण शिक्षको में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता–

समूह	N	M	SD	M1-M2	CR	सार्थकता
शहरी शिक्षक	50	101.04	7.69	1.94	1.21	असार्थक
ग्रामीण शिक्षक	50	99.10	8.38			

उपरोक्त परिणामो के अनुसार हम कह सकते है कि शहरी एवं ग्रामीण शिक्षको में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नही है। जिसके कारण शिक्षक वर्ग समान जागरूकता प्रदर्शित कर रहा है। अतः शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

शोध निष्कर्ष– इण्टरमीडिएट स्तर के शहरी एवं ग्रामीण शिक्षको में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नही पाया गया जिससे यह सिद्व होता है कि पर्यावरण संरक्षण के प्रति शहरी शिक्षको की जागरूकता ग्रामीण शिक्षको के जागरूकता के स्तर के समान ही होता है।

सुझाव–

1.प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में 100 शिक्षको को लिया गया है।प्राप्त निष्कर्षो के गहन समीक्षा के लिए विस्तृत न्यादर्श पर यह अध्ययन पुनः किया जा सकता है।

2.यह अध्ययन जौनपुर जनपद के शिक्षकों पर किया गया है।जिसे अन्य जनपदो के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है

3.साक्षर तथा निरक्षर लोगो की पर्यावरण संरक्षण तथा स्वच्छता कार्यक्रमों के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया जा सकता है।

4.भारत सरकार द्वारा आयोजित विभिन्न स्वच्छता मिशन कार्यक्रमों का समीक्षात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

5.ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं में स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया जा सकता है।

6.बी.एड. तथा एम.एड. विद्यार्थियो का स्वच्छता तथा पर्यावरणीय जागरूकता कार्यक्रमों के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1.आर.पी. ठाकुरःपारिस्थितिकी संतुलन,कोमल प्रसाद प्रकाशन मन्दिर,आगरा।
2.एम.के.गोयलः पर्यावरण शिक्षा,अग्रवाल पब्लिकेशन,नई दिल्ली।
3.कपिल एच. के : "अनुसंधान विधियॉ व्यवहारपरक विज्ञानो में",भार्गव बुक हाऊस आगरा।
4.गुड व स्केट्सः "मैथडस ऑफ रिसर्च"न्यूयार्क न्यू एण्लीटन सैंचुरी क्राफ्ट 1964।
5.घिसली ई.ई.: "थ्योरी ऑफ साइक्लॉजी मेजरमेंट", टाटा मेग्राहिल पब्लिशिंग कम्पनी न्यू देलही।
6.चौधरी एस.सिंहः "शोध प्रोजेक्ट, क्रियात्मक अनुसंधान", खण्ड प्रथम स्वच्छता विभाग राजस्थान।
7.डॉ0 श्रुति मिश्रा : बीएचयू वाराणसी,शोध पत्र–भारतीय दर्शन में पर्यावरणीय विमर्श।
8.त्यागी गुलशन दासः "विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा,"विमल प्रकाशन मन्दिर आगरा,।
9.नागर,के एनः "साख्यिंकी के मूल तत्व,"मिनाक्षी प्रकाशन मेरठ।